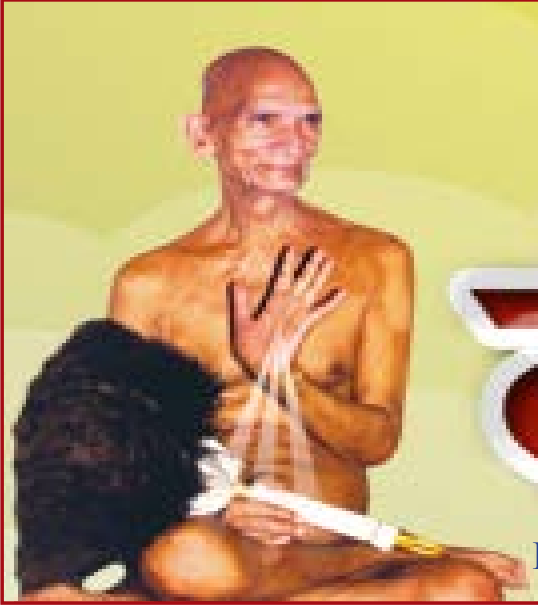

Issue: 145
31 August 2020

www.jainachar.com Daily

# जैनाचार

Editor: Mamta Anil Gandhi - Mumbai 9619160611 / 9323804751

## ljy LoHkkoh efu Jh lgL= lkxj th dk ljy Hkkok ls x# pj.kk e gvk lekfèk ej.k

जीवन का हर दिन कुछ नया संदेश लेकर हमारे सामने आता है लेकिन देखो तो जीवन की शुरुआत मंगल हो यह पूर्णतः हमारे हाथ में नहीं, लेकिन अंत मंगल हो ऐसा पुरुषार्थ हमारे लिए संभव है। जिंदगी के कितने दिन आप जिये यह मायने नहीं रखता लेकिन उन दिनों में कितने दिन आपने सही रूप से जिंदगी को जिया यह महत्व रखता है। धर्म ही जीवन को सही दिशा देता है और उसे अंततः गंतव्य तक पहुंचाता है ऐसा धर्ममय जीवन जीने वाले प्रतापगढ़ निवासी श्री धर्मचंद जी मिंडा जिन्होंने परम पूज्य तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मति सागर जी महाराज के कर कमलों से महाराष्ट्र के उमलवाड में दिनांक15.6.2010 को मुनि दीक्षा प्राप्त कर मुनि श्री सहस्त्र सागर जी हो गए। अपना संपूर्ण जीवन गुरु की सेवा वैयावृति में बिताते हुए अपने आचार्य श्री महावीर कीर्तिजी, आचार्य श्री धर्मसागर जी, आचार्य श्री अभिनंदन सागर जी, आचार्य सन्मति सागर जी जैसे महान तपस्वी गुरु का आशीर्वाद प्राप्त किया। आपके गृहस्थ परिवार की हरी–भरी बगिया में आपकी धर्मपत्नी श्रीमती विमला देवी और 4 पुत्र रत्न व तीन पुत्रियां आप के संस्कारों से धर्ममय जीवन व्यतीत कर रहे हैं। आप बड़े ही सरल स्वभावी गुरु आज्ञा पालन करने में तत्पर थे। आपकी दीक्षा भी उसी समर्पण का सुफल है जहां आप से एक उपवास भी बड़ी कठिनाई से होता वही तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मति सागर जी की प्रेरणा से दीक्षा लेते ही उस चातुर्मास में दो आहार और १ उपवास की अविरल साधना निर्विघ्न रुप से संपन्न की। तपस्वी सम्राट की समाधि के पश्चात परम पूज्य आचार्य श्री सुनील सागर जी महाराज के पट्टाधीश पद के निर्णय के साक्षी थे और अपनी पूर्ण समर्पणता के साथ में अपना गुरु स्वीकार कर लगातार 11 वर्षीय तक साधना कर संयम का निर्वाह किया और दिनांक 28.8.20 को प्रतापगढ़ की ही धरा पर परम पूज्य सुनिल सागर जी गुरुदेव की कुशल निर्यापकत्व में णमोकार मंत्र को सुनते हुए गुरु चरणों में ही शांत भाव से समाधि मरण किया। कुछ दिनों पूर्व ही आप ही आपके परिवार से क्षुल्लिका सज्ज्ञान ज्ञानमति माताजी का समाधिमरण हुआ। आपके गृहस्थ भाई श्री ज्ञानचंद मिंडा समाधिस्थ मुनी श्री सत सागरजी से पूज्य आचार्य श्री से दीक्षा लेकर अपना जीवन सफल किया और मिण्डा परिवार के प्रतापगढ़ के तीन रत्नो ने ऐसी उत्तम समाधि साधकर अपनी जीवनरुपी मंदिर पर कलश चढाकर एवं आदर्श प्रस्तुत किया। हमारा भी जीवन गुरु चरणों में साधना करते हुए आत्मान्नोति के साथ जीवन का अंत गुरु चरणों में ही हो इसी शुभकामना के साथ गुरु चरणों में अनंतो नमोस्तु.....

आर्यिका श्री सुस्वरमति माताजी, संघस्थ

## bukѕ0gѕfV0g tѕu cky ikB'kkyk lkfgR;

यह एक छोटा सा प्रयास है बाल भगवान के लिये आधुनिकता की दौड़ में बच्चे बाहर की दुनियाँ की तरफ आकर्षित होतें है....तो अब उनके लिए तरह–तरह के इनोव्हेटिव्ह जैन बाल पाठशाला साहित्य तैयार किये है जो बहुत ही रोचक है...बच्चे तो क्या बड़े भी इससे प्रभावित हुये बिना नहीं रहेंगे...जिनधर्म की प्रभावना निर्दोष हो स्वामी................उत्कर्ष जी









## vipѕo Hkäh dk volj

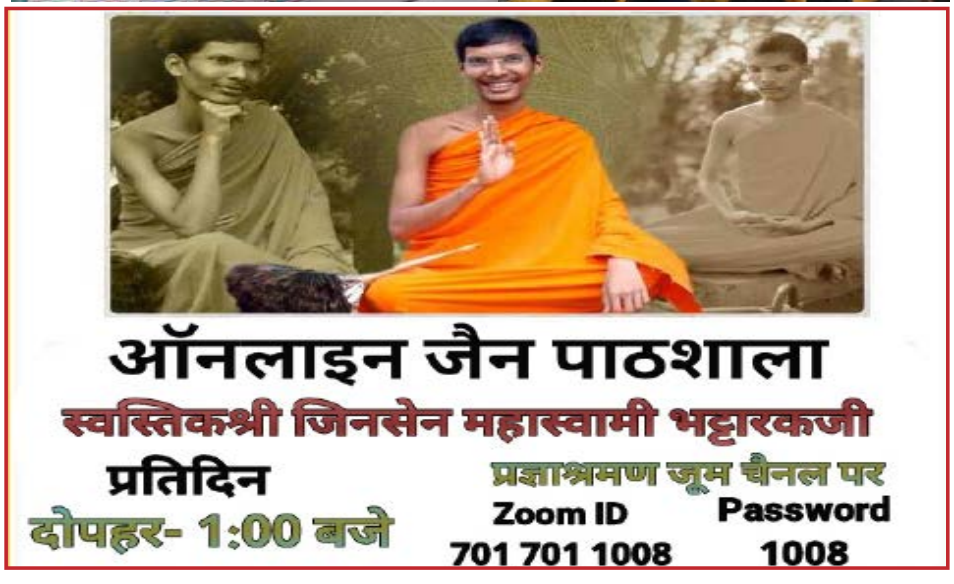

श्री १००८ आदिनाथ चंद्रप्रभु दिगंबर जैन मंदिर, भजन गल्ली, परभणी.(महाराष्ट्र) फोटो में दीख रही श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा मंदिरजी मे लॉकडाऊन के समय में एक दिन अचानक प्रतिदिन के अभिषेक पुजन बाद खंडित हुई जिस कारण समाज चिंतीत हो गयी।

प.पु. वयोवृध्द तपस्वी आचार्य 108 श्री विपुलसागरजी महाराज, प.पु. चर्याशिरोमणी श्रमणाचार्य श्री विशुध्दसागरजी महाराज, प.पु. अतिशययोगी आचार्य श्री भद्रबाहुसागरजी महाराज, प.पु. आचार्य श्री सच्चिदानंदीजी महाराज एवं प.पु. वैज्ञानिक आचार्य श्री निर्भयसागरजी महाराज से ईस प्रतिमा के खंडीत होनेपर समाधान के लिए चर्चा की गयी। खंडित प्रतिमा को घी शक्कर में रखते हुए समाज को सात दिन भक्ती एवं जाप्य करने पर प्रतिमा जुड सकेगी ऐसी भावना सभी आचार्य संघ से पहुंची। पुरी समाज ने संकल्प कीया एवं सभी आचार्य संघ के आशीर्वाद से भाद्रपद शु. 4 दि.22.08.2020 को प्रात के शुभ मंगल बेलापर खंडित प्रतिमा को घी शक्कर में रखा गया है। रोज समाज भक्ती, पुजन एवं ओम –र्हीं नमः की जाप कर रहे है।

भाद्रपद शु. 14 अनंत चतुर्दशी दि..01.09.2020 को शुभमंगल बेला में भ.पार्श्वनाथ जी की प्रतिमा को घी शक्कर से निकाला जायेगा। सभी आचार्य संघ के आशीर्वाद एवं समाजजनों को आशा है भगवान का अतिशस्वरुप प्रगट होगा। पूरे भारत वर्ष के जैन समाज से निवेदना है यह प्रतिमा जल्दी से जल्दी फिर से दर्शनीय हो जाये इस हेतु इस ऊपर दिया हुआ जाप की एक माला ले।

## mÙke vfdѕpu ;kuh vkRedѕfær djuk

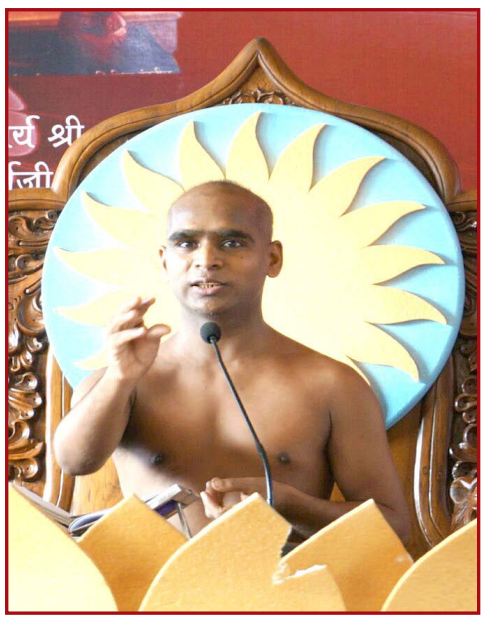



आकिचन्य धर्म आत्मा की उस दशा का नाम है जहां पर बाहरी सब छूट जाता है किंतु आंतरिक संकल्प विकल्पों की परिणति को भी विश्राम मिल जाता है। बाहरी परित्याग के बाद भी मन में ***मैं*** और ***मेरे पन*** का भाव निरंतर चलता रहता है, जिससे आत्मा बोझिल होती है और मुक्ति की ऊर्ध्वगामी यात्रा नहीं कर पाती।

जिस प्रकार पहाड़ की चोटी पर पहुंचने के लिए हमें भार रहित हल्का होना जरूरी होता है उसी प्रकार सिद्धालय की पवित्र ऊंचाइयां पाने के लिए हमें अकिंचन, एकदम खाली होना आवश्यक है। यह आत्मा, संकल्प, विकल्प रूप कर्तव्य भावों से संसार सागर में डूबती रहती है।

परिग्रह का परित्याग कर परिणामों को आत्मकेंद्रित करना ही अकिंचन धर्म की भावधारा है। जहां पर भीड़ है, वहां पर आवाज, आकुलता और अशांति है किंतु एकाकी एकत्व के जीवन में न कोई आवाज है और न कोई आकुलता और न अशांति। हम जहां पर जी रहे हैं वह कर्तव्य तो करना ही है किंतु यथार्थता का बोध हमें रहना चाहिए। सांझ घिरते–घिरते पक्षीगण एक तरुवर पर आकर विश्राम कर लेते हैं, किंतु सुबह होते ही अपने–अपने कार्य के लिए भिन्न–भिन्न दिशाओं में चले जाते हैं। ठीक इसी प्रकार संसार में हम सभी का निवास है। पुराने किसी संयोग की वजह से आप यहां एकत्रित हुए हैं किंतु आगे की यात्रा तो आपको एकाकी करनी है।

आज का यह धर्म जीवन की यात्रा को एकाकी आगे बढ़ाने का धर्म है जिसमें अपने और पराए का भेद समझकर निर्विकल्प निंद्वंद्व एकाकी आत्मा की अनुभूति में उतरना पड़ता है। जीवन में प्रतिदिन निरंतर यह भावना भाते रहना चाहिए जिससे एकाकीपन का बोध होता रहे।

आप अकेला अवतरे, मरे अकेला होय।
यूं कबहूं इस जीव का, साथी सगा न कोय।।

## HkhyokM+k 29 vxLr i;ѕ"k.k ioѕ ij ckiѕ uxj fLFkr Jh ine çHkѕ fnxѕcj tѕu efnj eѕ mÙke rc dh vkjkèkuk dh xbZA



सभी प्रतिमाओं पर अभिषेक के बाद पूनम चंद सेठी द्वारा शांति धारा का पाठ करते हुएबड़े बाबा1008 श्री पदम प्रभु भगवान पर अभिषेक एवं शांति धारा प्रभा चंद,विवेक बाकलीवाल एवं सुरेंद्र कुमार मयूर कुमार मोहित कुमार शाह आर के कॉलोनी परिवार ने की।

विवेक बाकलीवाल ने बताया है कि मनोरम प्रतिमा पदम प्रभु के दर्शन करते ही भाव में निर्मलता आ जाती हैउल्लेखनीय है कि पूर्व में निर्यापक मुनि पुंगवसुधा सागर महाराज ने संदेश दिया था कि यह प्रतिमा अतिशय कारी है जितनी भक्ति करोगे उतना अतिशय प्रकट होगा हर काम सफल होगा।

प्रकाश पाटनी, संगठन मंत्री